International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 22-01-2019; Accepted: 24-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 39-42

'लोई का ताना' उपन्यास का साहित्यैतिहासिक अध्ययन

वीरेंदर सिंह
प्राध्यापक, हिंदी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नांगल जमालपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

इतिहास: अर्थ और स्वरूप

इतिहास शब्द इति+हास से निर्मित है, इसका अर्थ है 'ऐसा हुआ था|' इस प्रकार अतीत की घटनाओं के कालकर्म में संयोजित इतिवृत को इतिहास माना जाता है| किंतु इतिहास निर्जीव पक्षों का संकलन मात्र नहीं है| वस्तुतः इतिहास मानवीय विकास की जीवन्त प्रक्रिया है| इतिहासकार एक दृष्टि- संपन्न अनुभवी व्यक्ति होता है| वह तटस्थ रहते हुए भी अपने अध्ययन और अनुभव से अर्जित दृष्टि से अतीत के तथ्यों का चयन, संकलन और विवेचन करता है|

ऐतिहासिक अध्ययन के लिए तीन बातें आवश्यक है

1. इतिहासकार की दृष्टि का स्वच्छ होना|
2. तथ्यों को बिना तोड़े मरोड़ें सही रूप में ग्रहण करना और अज्ञात या अल्पज्ञात तथ्यों की खोज करना|
3. दृष्टि को तथ्यों पर लागू करने में तर्कसंगत कारण- कार्य मूलक विवेचन- पद्धति का सहारा लेकर सही निष्कर्षो तक पहुँचना |

साधारणतः इतिहास का अर्थ यह लिया जाता है जिसका संबंध अतीत की घटनाओं तथा उनसे संबंधित मनुष्य प्राणी के जीवन चरित्रों का लिपिबद्ध स्वरूप जिसका मुख्य आधार है। अतीत के शिलालेख, स्मारक, प्राचीन ग्रंथ, ताम्र पत्र, दंत कथाएं आदि । इतिहास का संबंध जो कुछ व्यतीत हो चुका है, बीत रहा है,इस पक्ष से है ।वस्तुनिष्ठ एवं यथा सत्य निवेदन यह इतिहास की प्रतिज्ञा हैं। इस प्रकार इतिहास कार तथा अतीत के तथ्यों के अन्तः संबंध की सतत् प्रक्रिया ही इतिहास हैं । यह वर्तमान और अतीत के मध्य निरन्तर चलने वाला संवाद है। वर्तमान परिवेश और चिंतन की समझ के आधार पर ही इतिहासकार अतीत को समझने की चेष्टा करता है ।

इतिहास की परिभाषाएं

ई.एच.कार के अनुसार "अतीत की घटनाओं को कर्मबद्धता देकर कारण और प्रभाव के कर्म से रखना ही इतिहास है| कारण- कार्य श्रंखला में गुथकर ही तथ्य ऐतिहासिक बनते हैं| जब किसी तथ्य की अन्य तथ्यों के साथ संगति खोज ली जाती है, उसके सही संदर्भ का पता चल जाता है तो वह ऐतिहासिक तथ्य बन जाता है| इतिहासकार की प्रतिभा बिखरे हुए तथ्यों में निहित संगति के सूत्र खोज लेती है|"1

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य यहां की जनता की चितवृति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चितवृति के परिवर्तन के साथ- साथ साहित्य के स्वरुप में भी परिवर्तन होता चला जाता है| आदि से अंत तक इन्हीं चितवृतियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है|"2

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक कांट के अनुसार, "सृष्टि के विकास कर्म के मूल में प्राकृतिक नियम क्रियाशील रहते हैं| ऐतिहासिक विकास के स्वरूप को समझने के लिए उसके भीतर सक्रिय रहने वाले प्राकृतिक नियमों की प्रवृत्ति को समझना आवश्यक है|"3

हफ्फ महोदय के अनुसार, "इतिहास उपन्यास के लिए अधिक सहायक है बजाय अन्य ज्ञान- विज्ञान के प्रकारों के, यदि ऐसा न होता तो अब तक मानव- बुद्धि ने इस क्षेत्र को यूं ही नहीं छोड़ दिया होता|"4

हीगल के अनुसार, "इतिहास केवल घटनाओं को अन्वेषण एवं संकलन मात्र नहीं है अपितु इसके भीतर कार्य- कारण श्रंखला विद्यमान है|"5

लोई का ताना

डॉ रांगेय राघव का 'लोई का ताना' जीवनीपरक उपन्यास सच में कबीर का सर्जनात्मक स्थापना या रचनात्मक पुनः स्थापन भी कहा जा सकता है| क्योंकि जितना समीक्षक भी इतिहास लेखन, प्रतिभा संपन्न कवि, महाकवि को समझ सकता है या उसके प्रति न्याय कर सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं|

सच में 'लोई का ताना' सफल जीवनीपरक उपन्यास होने के

कारण कबीर के जीवन तथा भारतीय साहित्य एवं सांस्कृतिक नवजागरण में उनके महत्वपूर्ण योगदान की झांकी अत्यंत सजीव और सरल भाषा में प्रस्तुत करता है| सिद्ध कथा साहित्य के सर्जक डॉ० रांगेय राघव ने कबीर के व्यक्तित्व को भी एक नए परिवेश में संवारा है| 'लोई का ताना' केवल कबीर की जीवनी ही नहीं, बल्कि एक जीवनीपरक उपन्यास है| इस रचना की भूमिका में लेखक ने लिखा है "प्रस्तुत ग्रंथ में कबीर की झांकी है| वैसे कबीर के जीवन संबंधी तथ्य अधिक नहीं मिलते| मैं उनके साहित्य को पढ़कर जिन निष्कर्ष पर पहुंचा हूं उन्हीं को मैंने उनके जीवन का आधार बनाया है|"6

यहां इस भूमिका में लेखक ने जो बात कही है इसे हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह जीवनी है किंतु 'साहित्य- संदेश' का आधुनिक उपन्यास के अंतर्गत वे लिखते हैं- दूसरे वर्ग के अंतर्गत ही मेरी जीवनियाँ आती है जिन्हें मैंने उपन्यासों का रूप दिया है|

डॉ तिवारी लिखते हैं, "जीवनी में एक व्यक्ति का ध्यान रहता है, उसके कार्यकलापों और विचारों पर ही प्रकाश डाला जाता है|"7 लेखक की कुशलता इसमें है कि वह कबीर के पुत्र कमाल, मां नीमा तथा स्त्री लोई के चरित्र की अल्प किंतु मार्मिक झांकियां प्रस्तुत कर सका| कमाल की चरित्र कल्पना भी केवल किवंदन्ती पर आधारित है क्योंकि धारणा ही है कि कमाल कबीर का पुत्र था| कमाल के बारे में प्रसिद्ध है- बूढा वंश कबीर का, जब उपजा पूत कमाल| परंतु विद्वानों द्वारा इसे कबीर की पंक्ति नहीं माना|

रांगेय राघव की परिकल्पना का सर्वाधिक उत्कृष्ट रूप लोई के चरित्र सर्जना में मिलता है उपन्यास में तो कबीर केंद्रित है, परंतु नामकरण हुआ है लोई को लेकर उसे तदनुकूल महत्व भी मिला| लोई के प्रेयसी, पतिव्रता तथा मातृरूप की सरस, उज्जवल झांकियां प्रस्तुत की गई है| कबीर लोई से कहता है, "जो तू कहती है वह मुझे अच्छा लगता है|" निम्नलिखित संवादों में कबीर और लोई का यह सहचारी भाव स्पष्ट हो जाता है|

कबीर ने जो नवीन मार्ग देखा वह उत्तरदायित्व को समझ कर झेलता था| जहां व्यक्ति की पूर्णता थी, किंतु अपने को विनष्ट करने वाली अंधी पराजय नहीं थी| उसने कहां- "लोई क्या है?"

सब रसायन में किया, प्रेम सामान न कोय |
रति एक तन में संचरे, सब तन कंचन होय |
जोई मिले सो प्रीति में, और मिले सब कोय |
मनसो मनसा ना मिले, देह मिले का होय ||8

उपर्युक्त उपन्यास के आधार को देखते हुए भी लोई और कबीर के संवादों में जो स्नेह की झलक या रंग और रंगीनी देखने को मिलती है, उसे देख कर लगता है कि कबीर के नाम से ही प्रसिद्ध यह साखी है

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल|
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल||

जिस संवाद के बाद लोई साथ चलने को तैयार हो गई| तब कबीर मर चुका है और पंथ बन गया है| दूसरे परिच्छेद उपसंहार के पहले में कबीर की मृत्यु के बाद गुरु की कविताओं को सुना कर आपस में लड़ने वाले चेलों का वर्णन है| इस तरह पहले दोनों परिच्छेद कबीर की मृत्यु की स्थिति से संबंधित है| तीसरे 'सूर्यास्त हो गया' मैं कबीर की मृत्यु का तथा हिंदू मुसलमान दोनों द्वारा उनकी लाश जलाने- दफनाने का आग्रह करने से उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन है| जैसे आलम कह रहा था, "कौन होते होता तुम छूने वाले? जन्म- जिंदगी तुमने इसे नीच कहा, कबीर साहिब तुम्हारे नहीं, हमारे थे| हम भी उन्हें बाइज्जत दफन करेंगे|"9

पांचवे 'लोई का ताना' में कबीर घुमक्कड़ क्रांतिकारी तथा पारिवारिक जीवन को प्रस्तुत किया है| जैसे- कमाल ने अपनी मां से पूछा- 'अम्मा, दादा कहां चले गए हैं? अम्मा तब बैठी ताना कस रही थी वह काम करती गई और उसने कहा था- 'केवल यही जानती हूं कि वह चले गए हैं|

एक दिन किसी ने कह दिया कि "कबीर तो लबारा है| घर में नारी के मोह में फंसा हुआ है और दुनिया को उपदेश देता फिरता है| आदमी ही तो थे वह, बात लग गई, चले गए|"10

एक बार लोई ने कमाल से कहा कि तू अपने मन से लिख सकता है| तब कमाल ने कहा, नहीं अम्मा, कोई बोल दे तो मैं लिख सकता हूं| फिर लोई बोलती गई और कमाल लिखता गया|

"मन तू मानत क्यों न मना रे
कौन कहन को कौन सुनन को
दूजा कौन जना रे|"11

छटे आरंभ में कबीर के अपनी शादी से पूर्व का वह रुप है जब वह सामाजिक विषमताओं का अध्ययन कर रहा था| वह वैराग्य और प्रेम के संघर्षों में उलझा हुआ था| "हमें मंदिर में प्रवेश इसलिए नहीं देते क्योंकि हम नीच जात के हैं| हम नीच जात क्यों है? तमाम पुजारी यहां- वहां जगह-जगह खूब पैसा लूटते हैं| छुआछूत तो ऐसी जबरदस्त है कि देखकर कबीर का दिल कांप जाता है| इन पुजारियों के कर्म

तो इतनी नीच है कि कहा नहीं जाता| पाखंड, घृणा, अहंकार और ईर्ष्या ही इनके भीतर भरी हुई है|"12

यहां पर ऐसे वर्णनो में ऐसे चित्रणों में हमें उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति एवं रागात्मक रोचकता से भरे उपन्यास के तत्वो का प्रमाण मिल जाता है|

सातवे परिच्छेद में कबीर की महानता, नए पथ और चिंतन को स्पष्ट किया गया है| कबीर जुलाहा था| उसने पहले ब्राह्मण को पूज्य समझा था, फिर जोगियों से प्रभावित हुआ| फिर वह जागा तो उसके भीतर की शक्ति जागी, उसने इन सब बंधनों को तोड़ दिया| "कबीर संस्कृति का पुनर्जागरण था, दीन जनता का पहला सस्वर निनाद था| पर लोगों ने उसे दबाया, क्या वह दब सकेगा? वह तो मेहनत की कमाई पर चलने वाला आदमी था| दलित जात भी, कुल भी, धनहीन परंतु अपराजित|"13

अंतिम परिच्छेद में कबीर के विचारों पर लिखा सोदाहरण आलोचनात्मक निबंध बन गया| इस परिच्छेद में तो कबीर जीवन से संबंधित विचित्र प्रसंगों को एक साथ एकत्र कर दिया गया|

लेखक पाठकों की उत्सुकता को बनाएं तथा कुतूहल को जगाए रखने में असफल रहा है| फिर भी यह कहा जा सकता है कि कथा- काल की सीधी विधि की अपेक्षा इस वक्र- विधि से कथा में कुछ सौन्दर्य अवश्य आ गया है| इसी कारण यह कबीर की जीवनी नहीं, कबीर के जीवन के आधार पर शुद्ध जीवनीपरक उपन्यास उभर आया है| यदि उपन्यास जीवनी क्रम में लिखा जाता है तो कबीर का जन्म पहले बताना पड़ता है और रहस्यमय होकर भी रहस्य न बन पाता| कबीर- लोई परिणय की मार्मिक घटना तब साधारण हो जाती|

'लोई का ताना' कबीर- जीवन के विभिन्न चित्र तथा विवरण है| इन सब को मिलाकर कबीर की जीवन गाथा स्पष्ट हो जाती है| डॉ रांगेय राघव ने लोई का ताना की भूमिका में स्पष्ट लिखा है, कबीर निर्गुण के परे थे| कबीर ने जो राह दिखाई वह मानवता को कल्याण की ओर ले जाने वाली थी| कबीर ने हिंदू- मुसलमान दोनों को नितांत निम्न जाति के आदमी की आंखों से देखा| पर चेले पढ़े लिखे थे| उस समय मुसलमान शासकों की शक्ति भी बढ़ गई थी| सारी भारतीय जातियों का संगठन हो रहा था| निम्न जातीय जनता के रूप में कबीर के अनुयाई भी दलित थे| शासक मुस्लिम था| अत: इस्लाम पर अत्याचारों के नाम चढ़ते थे| उस समय कबीर पंथ हिंदू मत ही बन गया था| कबीर ने तो भारत के सांस्कृतिक जागरण की नींव डाली है| उसके युग के बंधन थे और उनकी उस पर छाया है| वह धीरे- धीरे विकास करके कितना आगे आ गया था|

रांगेय राघव ने एक विशेष संवाद की योजना कर लोई से अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है| कथानक में कमाल के यह प्रश्न करने पर कबीर बदलते क्यों है? के उत्तर में कोई कहती है "जिस तरह पहले घुटनों पर चलते हैं, फिर दोनों पांव पर चलते हैं इसी तरह आदमी की समझ धीरे धीरे पकती है|"14 इससे कबीर के विचार विकास के साथ उसके चरित्र का भी आभास मिलता है|

नामकरण के आधार पर नारी पात्रों में लोई का स्थान सर्वोच्च है और अन्य नारी पात्र लगते हैं गणना के लिए गिनाए गए हैं| किंतु रांगेय राघव की सहानुभूति को विश्लेषित करना आवश्यक है| लेखक की सहानुभूति कबीर की अपेक्षा लोई के साथ अधिक है| कबीर जहां प्रेम की चर्चा करता हुआ दिखलाई पड़ता है वहां लोई अपने को समर्पित करती हुई मिलती है|

जीवनी वास्तविक होती है और उपन्यास वास्तविक होते हुए भी काल्पनिक होता है| जीवनी परक उपन्यास में कल्पना पर प्रतिबंध अवश्य लग जाता है और इस दृष्टि से यह जीवनी के अधिक निकट है कमाल, लोई और नीमा आदि पात्र कबीर की जीवनी से संबंधित होते हुए भी काल्पनिक पात्र है| इन पात्रों के चरित्रांकन में लेखक ने अपनी रचना को कुछ सरस बनाने के अतिरिक्त कबीर के व्यक्तित्व को चरित्र का रूप दे सका है तथा अपने कबीर संबंधी आलोचनात्मक दृष्टिकोण का प्रतिपादन भी कर सका है|

इस प्रकार इस समग्र कृति में लेखक ने औपन्यासिक तत्वों का स्थान- स्थान पर सफल प्रयोग किया है| लेखक ने तत्कालीन परिस्थितियों के साथ वर्तमान युगीन समस्याओं का एवं आधुनिक विचारधारा का बड़ी कुशलता से वर्णन किया है|

कबीर और उसकी जीवनी को रोचक बनाने के लिए उसका और लोई का रोमांचकारी वर्णन आदि बातों के विवेचन से यह सिद्ध होता है कि 'लोई का ताना' एक जीवनी नहीं पर शुद्ध जीवनीपरक उपन्यास है|

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि इस जीवन चरित्तात्मक उपन्यास में चरित्र के साथ देशकाल का भी सुंदर तथा सजीव चित्र और झलकियां प्रस्तुत की गई है| रांगेय राघव ने अपनी प्रतिभा से महत्वपूर्ण साहित्यैतिहासिक पात्र कबीर को युग निर्माता लोकनायक तथा साहित्यकार के रूप में चित्रित करने में पूर्ण सफलता पाई है|

संदर्भ

1. डॉ० हरीश चंद्र वर्मा, डॉ० रामनिवास गुप्त, हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 10
2. डॉ० सत्यपाल चुघ, ऐतिहासिक उपन्यास पृष्ठ 22
3. डॉ० हरीश चंद्र वर्मा, डॉ० रामनिवास गुप्त, हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 11

4. डॉ० सत्यपाल चुघ, ऐतिहासिक उपन्यास पृष्ठ 20
5. डॉ० हरीश चंद्र वर्मा, डॉ० रामनिवास गुप्त, हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 11
6. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 3
7. डॉ० तिवारी, समीक्षा के सिद्धांत पृष्ठ 103
8. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 83
9. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 10
10. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 50
11. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 62
12. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 63
13. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 69
14. डॉ० रांगेय राघव, लोई का ताना पृष्ठ 50-51